विन्ध्यालोक

सम्पादक
डॉ० गंगा प्रसाद बरसैंया
डॉ० राधा बल्लभ शर्मा

विन्ध्यालोक

सम्पादक
डॉ० गंगा प्रसाद बरसैंया
डॉ० राधा वल्लभ शर्मा

बुन्देलखण्ड कला संस्कृति परिषद
छतरपुर

प्रथम संस्करण : १९८२

प्रबंध

दयाशंकर शुक्ल : रवि खरे

●

प्रकाशन

बुन्देलखण्ड कला संस्कृति परिषद्
छतरपुर (म० प्र०)

●

मुद्रण

स्वतंत्र प्रभाकर रावत
प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, छतरपुर

●

सम्पर्क

सम्पादक 'विन्ध्यालोक'
नारायण बाग,
छतरपुर (म० प्र०) ४७१००१

मूल्य

इस प्रति का मूल्य पंद्रह रुपये मात्र

अनुक्रमणिका

६. बुन्देली वीरता के प्रतिमान : महाराज छत्रसाल/प्रो० ज्योतिप्रकाश सक्सेना
१३. बुन्देलखंड का साहित्य : शोध की दिशायें/डा० गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
२१. बुन्देलखंड की रामकाव्य परम्परा / डा० परमलाल गुप्त
२५. बुन्देली का रामकाव्य / डा० लक्ष्मीनारायण दुबे
२७. बोलियों का साहित्य : शोध की दिशायें / डॉ० त्रिलोचन पांडेय
३६. बुन्देली लोक साहित्य का स्वरूप / डा० बलभद्र तिवारी
४१. बुन्देलखंड की लोकगाथाओं के विविध रूप / डा० दुर्गेश दीक्षित
४४. बुन्देली और उसके विविध क्षेत्रीय रूप / डा० कैलाश बिहारी द्विवेदी
५१. बुन्देली शब्द-रत्नों की एक झलक / डा० हरगोविन्द सिंह
५६. बुन्देली के रंग अन्य भाषाओं के संग / वीरेन्द्र शर्मा

५८. बुन्देली कहावतें : अप्रस्तुत एवं अलंकार / डा० वीरेन्द्र 'निर्झर'
६३. बुन्देली पहेलियाँ / डा० कृष्णकुमार हूँका
६५. कवि वाणी का अविस्मरणीय प्रसंग / श्री० के० पी० सिंह
६७. बुन्देलखंड का जयदेव 'ईसुरी' / डा० नाथूराम चौरसिया
७२. कवि गंगाधर और उनका साहित्य / डा० राधावल्लभ शर्मा
८०. बुन्देलखंड की मूर्तिकला में चन्देलकालीन प्रतिमायें / डा० महेन्द्र वर्मा
८६. बुन्देली समारोह-८१ : एक रपट / डा० राधावल्लभ शर्मा
९१. बुंदेलों का काव्य इतिहास / उदय शंकर दुबे
९६. बुंदेल खंड के अज्ञात साहित्यकार और उनकी कृतियां / गंगाराम शास्त्री
१०७. प्राचीन कवि मान और उनका काव्य / डा० देवकरन शर्मा

आमुख

भारतवर्ष के नाभिप्रदेश पर स्थित विन्ध्यपर्वत दशार्णप्रदेश (बुन्देलखंड) का ही नहीं, अपितु समग्र भारतीय व्यक्तित्व की दृढ़ता, विनम्रता, स्वाभिमान, पुरातनता और साधना का साक्षी है। रामराजा और जुगल किशोर की छत्रछाया में अमृतजल से आपूरित तथा सतत प्रवाहित नदियों की निर्मल धाराओं से प्रक्षालित देश का यह केन्द्र-बिन्दु बुन्देलखंड सदैव संत-साधकों, कला-सर्जकों तथा राष्ट्रप्रेमी बलिदानी वीरों की तपस्थली रहा है। यही कारण है कि राम हो या रहीम, पांडव हों या प्राणनाथ, खजुराहो हो या कालिंजर सभी यहाँ एक साथ प्रतिष्ठित रहे हैं। वीरों और हीरों की यह रत्नगर्भा भूमि विन्ध्याचल की न झुकनेवाली दृढ़ता और स्निग्ध सौहार्द प्रदान करने वाली तरलता से आपूरित है।

बुन्देलखंड की परम्परायें गौरवपूर्ण रही हैं। भारतीय साहित्य और इतिहास के तमाम स्वर्णिम पृष्ठ यहाँ के प्रदेय से अलंकृत हैं, फिर भी सबसे अधिक उपेक्षा इतिहास ग्रंथों में इसी क्षेत्र की की गई। उपेक्षा की यह परम्परा सदियों पूर्व प्रारम्भ हुई थी जो आज भी अखंडित है। इसका कारण विन्ध्याचल की दुर्लंघ्यता, यातायात के साधनों की अपर्याप्तता और संग्रह तथा प्रकाशन के साधनों का सर्वथा अभाव तो है ही, इससे भी बड़ा कारण है—हमारी संतुष्टि और उदासीनता। 'विन्ध्य के वासी उदासी सदा' यदि तुलसीदास जी अपनी प्रत्यक्ष अनुभूति के आधार पर अंकित कर गये तो हमने अभी तक उस निष्कर्ष की मर्यादा को भंग नहीं होने दिया। किन्तु यह सब अब संतोष और सम्मान का आधार नहीं माना जा सकता।

समय करवट लेता है। गुरु की आज्ञा से झुका हुआ यह अनुशासित विन्ध्याचल आखिर कब तक प्रतीक्षा करता हुआ काल के आघात झेलता रहेगा। प्रतीक्षा अनन्तकाल तक नहीं की जा सकती। विन्ध्याचल को सीधा

खड़ा कर उसकी गर्द-गुबार साफ़ करना जरूरी है ताकि उत्तर-दक्षिण के इस सेतु का व्यक्तित्व उजागर हो सके और उसकी छाती पर सहस्राब्दियों से अंकित होती रही गाथाएँ एक बार पुनः नये आलोक में देखी, पढ़ी और संकलित की जा सकें। अन्यथा हमारी यह उदासीनता हमें हमारी सम्पूर्ण कला, साहित्य, संस्कृति और इतिहास की परम्परा से विलगकर हमारे विराट, व्यक्तित्व को बहुत बौना बना देगी।

इसी भावना से गत वर्ष सन्' ८१ के प्रारम्भ में नवगठित 'बुन्देलखंड कला-संस्कृति परिषद्', छतरपुर के तत्वावधान में 'बुन्देली समारोह-८१' का ऐतिहासिक विशाल आयोजन किया गया था जिसमें बुन्देलखंड तथा दूसरे क्षेत्रों के सैकड़ों विद्वान साहित्यकारों और साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया था। आयोजन में कला, साहित्य, संस्कृति, इतिहास-पुरातत्व और लोकसाहित्य से संबंधित संगोष्ठियों के साथ ही बुन्देली कवि-सम्मेलन, बुन्देली लोक-संगीत सम्मेलन तथा प्रदर्शनी आदि के अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये जिसकी हजारों दर्शकों और श्रोताओं ने खुले मन से सराहना की थी। प्रायः संगोष्ठियाँ नीरस होती है किन्तु इन संगोष्ठियों में सैकड़ों की उपस्थिति ने लोगों की यह धारणा बदल दी। यही कारण है कि लोग लगातार ६-६ घंटे मन्त्रमुग्ध बैठे रहे।

परिषद् का लक्ष्य यही था कि एक ऐसा सशक्त मंच प्रस्तुत किया जावे जो बुन्देलखंड की संस्कृति, कला-साहित्य, इतिहास और लोकसाहित्य की सम्पदा को आलोक प्रदान कर सके। शोध, विचार-विमर्श, संकलन, सम्पादन, प्रकाशन के बिना यह सब संभव नहीं है। परिषद् ने पहली बार सभी विद्वानों को आमन्त्रित कर इसका सूत्रपात किया है। यदि सभी का सहयोग मिला तो निश्चित रूप से परिषद् के माध्यम से हमारे विस्मृत अतीत को आलोक, वर्तमान को चेतना और भविष्य को नया विश्वास प्राप्त होगा। हमारे पास सुव्यवस्थित रूप में अभी कुछ भी नहीं है। हमारी योजना एक शोध-संस्थान की स्थापना कर इसको पूरा किये जाने की है। यह प्रकाशन इसी व्यापक उद्देश्य की शुरुआत है।

विन्ध्याचल के गौरवास्पद व्यक्तित्व को प्रेरणा का आधार बनाकर ही हमने इसका नाम 'विन्ध्यालोक रखा है। इसमें बुन्देली समारोह-८१ की संगोष्ठियों में पढ़े गये कतिपय निबंधों का संग्रह है जो विन्ध्य के आलोक से युक्त होकर विन्ध्याचल को आलोकित करने की क्षमता से सम्पन्न हैं। विश्वास है कि इसमें संकलित आलेखों से इस क्षेत्र के अनेक जाने-अनजाने और अनछुये पक्ष उजागर होंगे।

संगोष्ठियों में बहुत से निबन्ध पढ़े गये थे। साधनों के अभाव के कारण हम सभी निबन्ध प्रकाशित नहीं कर पा रहे जिसका हमें हार्दिक खेद है। हमारा प्रयास है कि भविष्य में हम उनका प्रकाशन कर सकें। प्रकाशन की इस शृंखला को नियमित करने का भरपूर प्रयास किया जावेगा।

राष्ट्र के सम्मान की रक्षा के लिये आजीवन जूझनेवाले बुन्देलखंड केशरी महाराज छत्रसाल की २५० वीं पुण्यतिथि तथा मध्यप्रदेश की रजत जयंती वर्ष की गणतंत्री बेला पर 'विन्ध्यालोक' का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण घटना है। आप सबका सहयोग इसी प्रकार मिलता रहा तो विन्ध्य के शिखर से विकीर्णित यह आलोक कभी क्षीण नहीं होगा, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है। नये वर्ष की पुनीत बेला पर आप सबका हार्दिक अभिनन्दन। आइये, मिलकर नये आलोक का स्वागत कर उसे स्नेहापूरित बनायें।